हिन्नी बिन्नी बंको

हिन्नी बिन्नी बंको

हिन्नी बिन्नी बंको और बूढ़ा फटीचर आदमी

हिन्नी बिन्नी बंको अपने बड़े भाई के साथ एक घर में रहता था. उनका घर जंगल के किनारे पर था. उसका भाई उसे प्यार न करता था. वह हिन्नी बिन्नी बंको को सारा दिन काम पर लगाये रखता था.

“आलू के खेत में खुदाई करो! मक्खन मथो! सुअरों की देखभाल करो! तुम तो मूर्ख लड़के हो, हिन्नी बिन्नी बंको!” उसका बड़ा भाई इस तरह उससे बात करता था. इसलिये हिन्नी बिन्नी बंको बस हर समय काम ही रहता था. और वह प्रसन्न न था.

एक दिन एक बूढ़ा फटीचर आदमी उनके घर आया. उसे पीने के लिये पानी चाहिये था. हिन्नी बिन्नी बंको ने उसे पानी दिया. बूढ़े फटीचर आदमी ने पानी पिया. फिर उसने हिन्नी बिन्नी बंको की ओर देखा. “तुम प्रसन्न नहीं दिखाई देते,” उसने कहा. “क्या बात है?”

“मेरा भाई मुझे प्यार नहीं करता,” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. “वह सारा दिन मुझ से काम करवाता है.”

“अच्छा,” बूढ़े फटीचर आदमी ने कहा. “यह तो ठीक बात नहीं है.” उसने अपनी पोटली खोली और एक फिडॅल (वाद्‌ययंत्र) निकाला.

“यह ले लो,” उसने कहा. “तुम यह फिडॅल बजाया करो. तुम्हें बहुत ख़ुशी मिलेगी.”

“लेकिन मुझे तो फिडॅल बजाना आता ही नहीं,” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा.

“अगर तुम्हारे मन में इच्छा होगी तो तुम सीख जाओगे,” बूढ़े फटीचर आदमी ने कहा. “अलविदा.” और इतना कह कर वह जंगल की ओर चला गया.

हिन्नी बिन्नी बंको ने फिडॅल उठाया. उसने उसे बजाने का प्रयास किया. ‘चीँ चीँ! चाँ चाँ!’ यह तो बड़ी डरावनी आवाज़ थी. हिन्नी बिन्नी बंको ने फिडॅल रख दिया.

अगली सुबह हिन्नी बिन्नी बंको का भाई चिल्लाया, “हिन्नी बिन्नी बंको! मूर्ख लड़के, जाओ आलू के खेत में खुदाई करो!”

खुदाई करते-करते हिन्नी बिन्नी बंको ने अपने फिडॅल के बारे में सोचा. शीघ्र ही उसे अपने मन में एक गीत सुनाई दिया.

‘खोदो, खोदो करो आराम

खोदो, खोदो करो आराम

उल्टा घूमों पाँव धड़ाम

खोदो, खोदो करो आराम.’

“यह तो अच्छा गीत है,” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. “मैं इस गीत का नाम रखूँगा, ‘आलू के खेत का गीत.’ उसने अपना काम पूरा किया और फिडॅल पर गीत बजाने के लिए घर की ओर भागा.
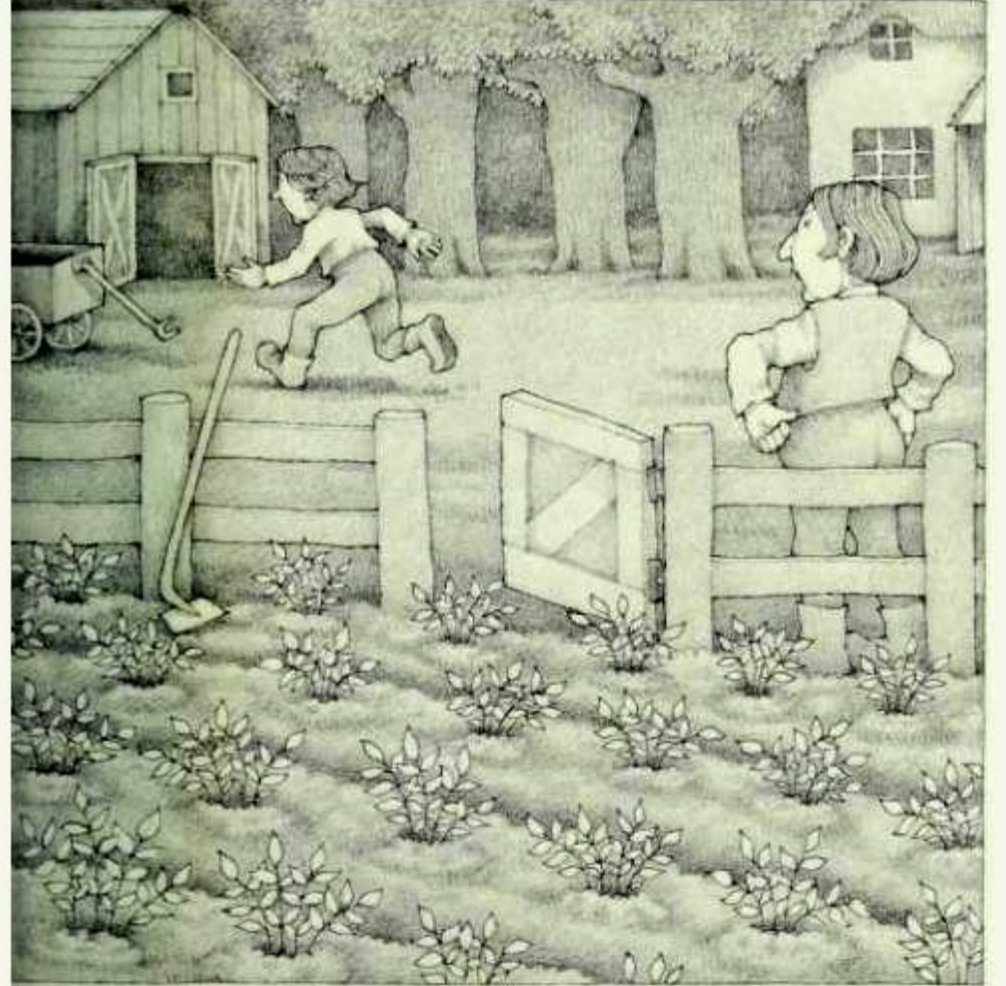
अगली सुबह हिन्नी बिन्नी बंको को मक्खन मथना पड़ा. जब वह मक्खन मथ रहा था तब उसके मन में एक गीत बज रहा था.

‘मथना मथना थम

मथना मथना थम

मथना मथना मथना मथना

थम थम थम थम!’

उसने यह गीत भी फिडॅल पर बजाना सीख लिया.

हर दिन हिन्नी बिन्नी बंको को अपने मन में एक नया गीत सुनाई देता. उसने ‘सूअर को ढूंढो’ गीत सुना. उसने ‘बाल्टी साफ़ करो’ गीत सुना. उसने ‘बुद्धू गिलहरी’ गीत और ‘भाई चिल्लाया’ गीत भी सुना. शीघ्र ही यह सारे गीत वह अपनी फिडॅल पर बजा सकता था.

फिर एक दिन वही बूढ़ा फटीचर आदमी उनके घर आया. हिन्नी बिन्नी बंको दौड़ कर उसके लिये पानी लाया.

“धन्यवाद,” बूढ़े फटीचर आदमी ने कहा. “अब मुझे दिखलाओ की तुम फिडॅल कितना अच्छा बजा सकते हो.”

हिन्नी बिन्नी बंको थोड़ा घबरा गया. उसे लगा कि, किसी कारण, बूढ़ा फटीचर आदमी कम दरिद्र लग रहा था. अगर उसने समझा कि हिन्नी बिन्नी बंको तो बेकार संगीतकार था? लेकिन हिन्नी बिन्नी बंको ने अपना फिडॅल उठाया और कुछ पलों के लिए वह गीत सुने जो उसके मन में थे. फिर वह फिडॅल बजाने लगा. उसने बहुत देर तक बूढ़े फटीचर आदमी को संगीत सुनाया. फिर वह रुक गया.

“बस इतना ही,” उसने कहा. “मुझे इतने ही गीत आते हैं.”

“तुम फिडॅल बहुत अच्छा बजाते हो,” बूढ़े फटीचर आदमी ने कहा. “और यह गीत बहुत सुंदर हैं. तुम ने बहुत मेहनत की है.”

हिन्नी बिन्नी बंको को आश्चर्य हुआ. “लेकिन मैंने कोई मेहनत नहीं की,” उसने कहा. “मुझे तो बस फिडॅल बजाना अच्छा लगता है.”

बूढ़े फटीचर आदमी ने मुस्कराया. “काम करने का यही सबसे बढ़ीया ढंग है,” उसने कहा.

हिन्नी बिन्नी बंको का रहस्य

नाश्ते से पहले हिन्नी बिन्नी बंको अपना फिडॅल बजाता. वह दुपहर के खाने के बाद बजाता. वह काम के बीच में बजाता. हर रात सोने से पहले, हिन्नी बिन्नी बंको फिडॅल को ठोढ़ी के नीचे दबा कर उस बजाता.

“तुम इस फिडॅल के साथ कुछ अधिक ही मस्ती कर रहे हो,” उसके भाई ने कहा. “तुम्हें अधिक काम करना चाहिये. मैं चाहता हूँ कि तुम सेम की फलियाँ लगाओ.”

“मुझे सिर्फ तीन सप्ताह में खाने के लिये सेम की फलियाँ चाहिये, नहीं तो तुम्हारा यह फिडॅल मैं छीन लूंगा.”

“यह तो अन्याय है,” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. “सेम उगाने के लिये तीन सप्ताह से अधिक समय लगता है.”

“वह तुम्हारी समस्या है,” उसके भाई ने कहा और दनदनाता हुआ वहां से चला गया.

हिन्नी बिन्नी बंको ने सेम के बीज बोये. फिर वह सोचने लगा, और सोचता रहा. आखिरकार उसे एक बात सुझाई दी. उसने अपना फिडॅल उठाया, उसे ठोढ़ी के नीचे दबाया, और एक ख़ास गीत बजाने लगा. यह गीत था, ‘अपनी छोटी जड़ें बढ़ाओ, खूब बढ़ाओ, खूब बढ़ाओ.’ उसने यह गीत हर दिन बजाया. धरती के भीतर सेम के बीजों ने यह गीत सुना और वह झटपट बढ़ने लगे.
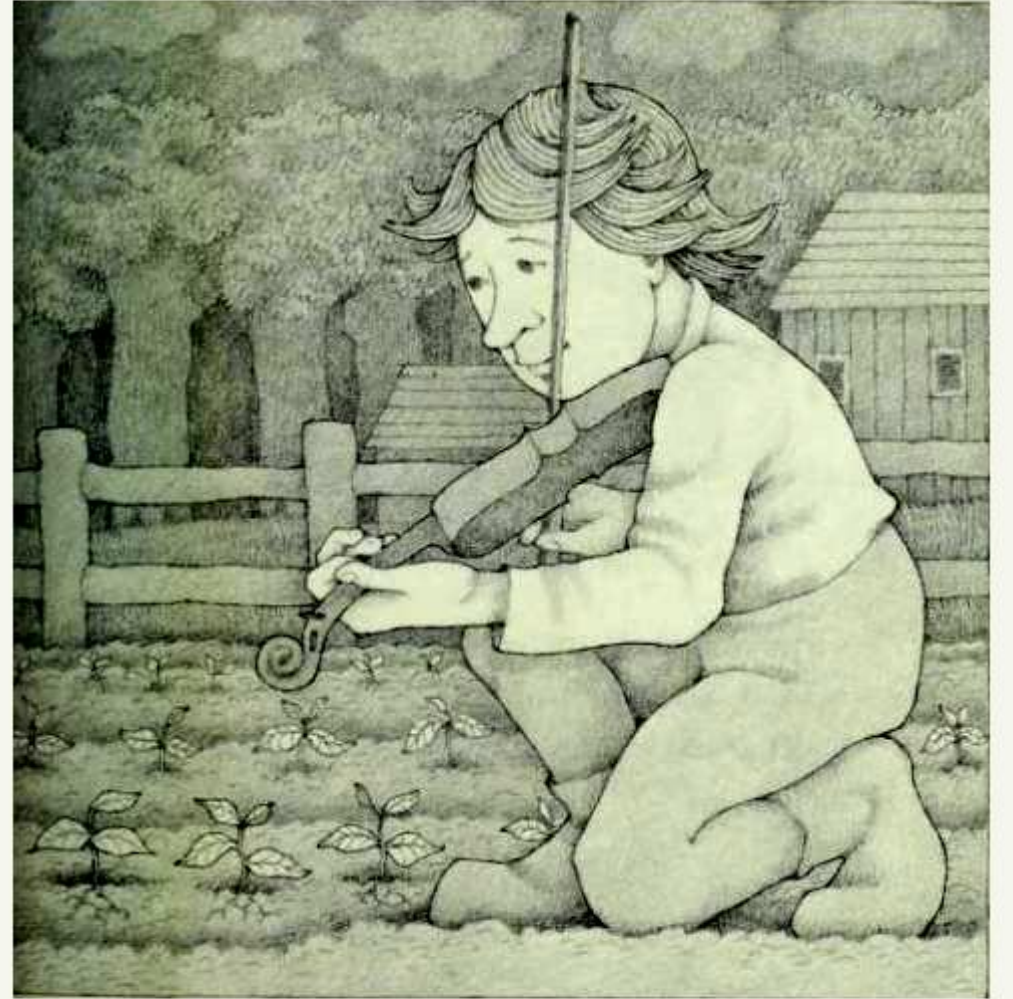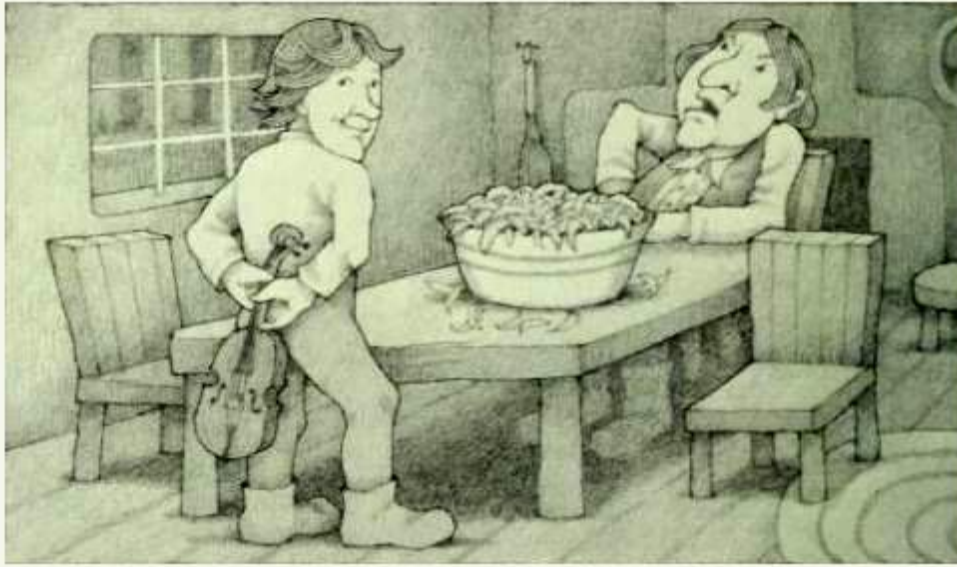
तीन सप्ताह के बाद हिन्नी बिन्नी बंको ने एक बड़े कटोरे में सेम की फलियाँ भर कर भाई के सामने रखीं.

"यह तुमने कैसे किया?" उसके भाई ने पूछा. वह चिढ़ा हुआ था.

"मैंने बहुत मेहनत की," हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. "और मेरा एक रहस्य भी है."

"ठीक है, अब तुम्हें और अधिक मेहनत करनी होगी," उसका भाई बोला. "मैं चाहता हूँ कि गाय पहले से दुगना दूध दे, मुर्गियाँ पहले से दुगने अंडे दें और सूअर पहले से दुगना मोटा हो जाए. यह सब तीन हफ्तों में हो जाना चाहिये. अन्यथा तुम्हारा फिडॅल मैं छीन लूंगा."

"यह उचित नहीं है," हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. "गाय और मुर्गियां और सूअर जितना कर सकते हैं कर रहे हैं."

"वह तुम्हारी समस्या है," भाई ने कहा और दनदनाता हुआ चला गया.

हिन्नी बिन्नी बंको ने अपना फिडॅल उठाया और खलिहान की ओर आया. उसने गाय को एक ख़ास गीत बजा कर सुनाया. गीत का नाम था 'मेरी गाय, प्यारी गाय.'

वह मुर्गियों के बाड़े में गया. उसने मुर्गियों को एक गीत सुनाया. गीत था का नाम था 'खुरचो- नोचो, कीड़े-कचड़ा.'

वह सूअरों के बाड़े में गया और सूअरों को एक गीत सुनाया. यह गीत था 'पानी सुड़कने वाला' गीत.

हिन्नी बिन्नी बंको हर दिन गाय और मुर्गियों और सूअर को फिडॅल बजा कर अपने असाधारण गीत सुनाता. यह गीत सुन कर उन्हें अच्छा महसूस होता. और इस तरह तीन सप्ताह के बाद गाय दुगना दूध देने लगी, मुर्गियां दुगने अंडे देने लगी और सूअर पहले से दुगना मोटा ही गया.

“यह तुम ने कैसे किया?” हिन्नी बिन्नी बंको के भाई ने पूछा. वह बहुत चिढ़ा हुआ दिखाई दे रहा था.

“मैंने बहुत मेहनत की,” हिन्नी बिन्नी बंको बोला. “और मेरा एक रहस्य भी है.”

“ठीक है, अब तुम्हें और अधिक मेहनत करनी होगी,” उसके भाई ने कहा. “कल तक तुम घास के मैदान से सारी घास काट कर ढेर बना देना, नहीं तो तुम्हारा फिडॅल मैं छीन लूंगा.”

“यह ठीक नहीं है,” हिन्नी बिन्नी बंको बोला. “घास का मैदान तो बहुत बड़ा है.”

“वह तुम्हारी समस्या है,” उसके भाई ने कहा और दनदनाता हुआ चल गया.
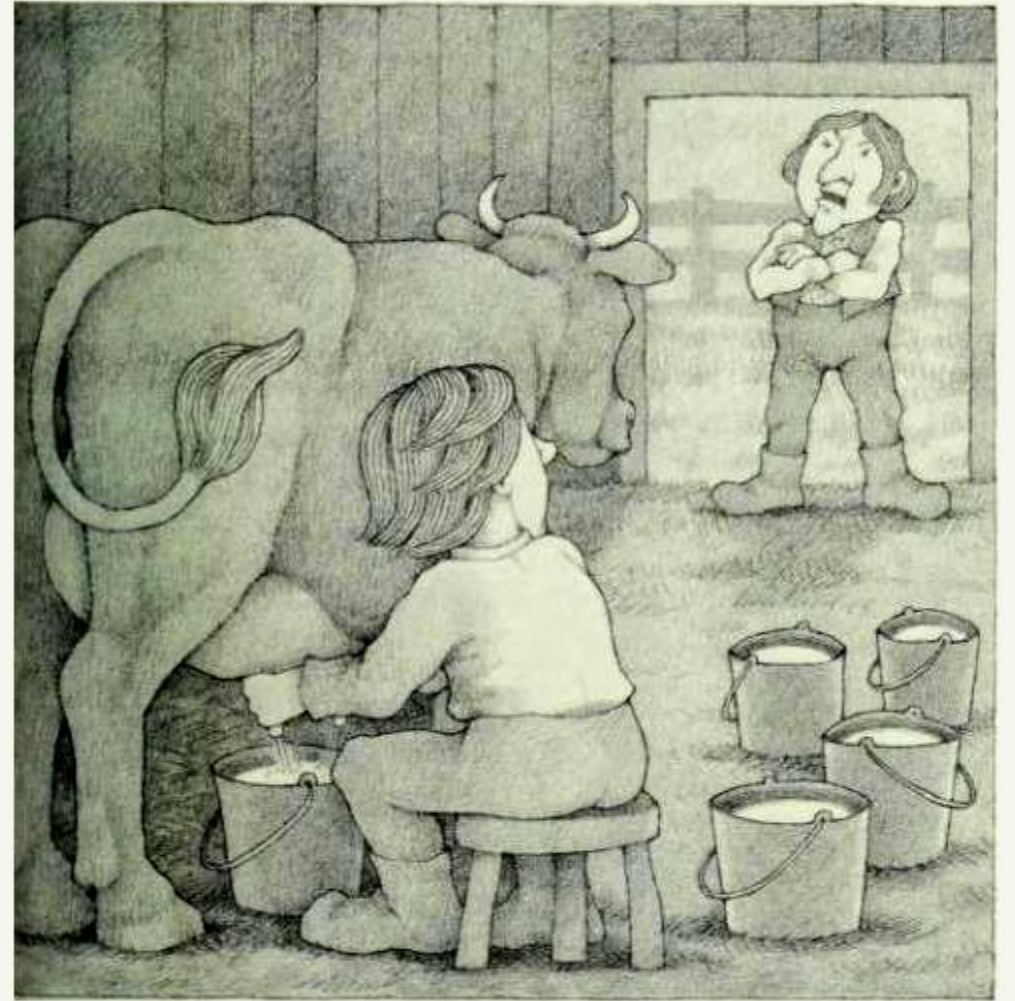
हिन्नी बिन्नी बंको ने अपना फिडॅल उठाया और नगर की ओर चल पडा. वह नगर के बीचों-बीच आ गया. फिर वह फिडॅल बजाने लगा. यह गीत था ‘घास काटो ढेर बनाओ.’ यह बहुत ही मधुर गीत था.

नगर में सब लोगों ने यह गीत सुना. सबके बदन में गुदगुदी सी होने लगे. सबके पाँव थिरकने लगे. सबके हाथ हिलने लगे. नगर में कोई भी स्थिर खड़ा न रहा पाया. जब हिन्नी बिन्नी बंको अपने घास के मैदान की ओर चला तो हर कोई उसके पीछे-पीछे आने लगा.
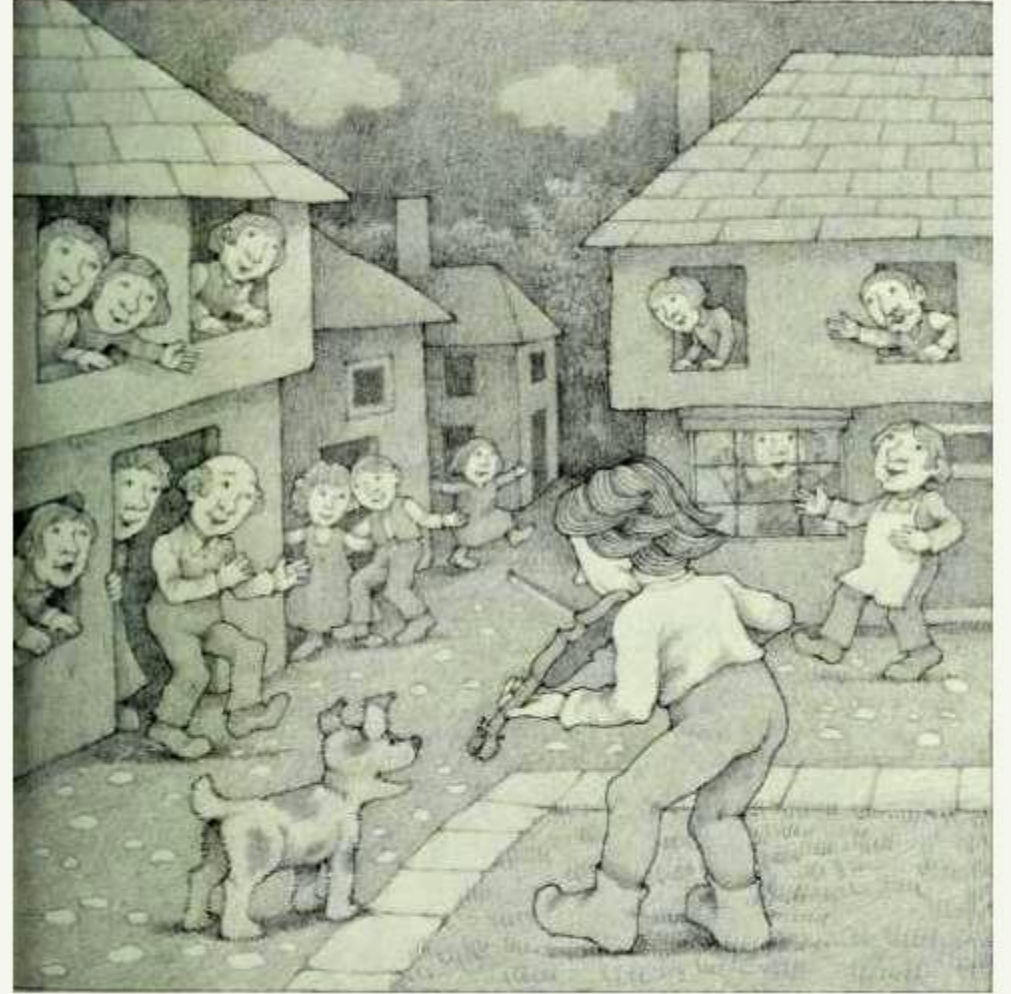
सब मुस्करा रहे थे और हंस रहे थे और नाच रहे था. सबने अपने घुटने घुमाये और अपने पाँव थिरकाये. उन्होंने सारी घास काट डाली और घास के ढेर बना दिए. फिर इतना मस्ती भरा गीत सुनाने के लिये हिन्नी बिन्नी बंको को उन्होंने धन्यवाद कहा.

"सारी घास काट दी है और ढेर बना दिए हैं," हिन्नी बिन्नी बंको ने अपने भाई से कहा.

"तुम ने यह कैसे किया?" उसके भाई ने पूछा. वह सच में बहुत चिढ़ा हुआ था.

"मैंने खूब मेहनत की," हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा.

“और अब मैं तुम्हें अपना रहस्य भी बता दूंगा. यह रहस्य है मेरा संगीत. लेकिन मुझे एक और रहस्य भी तुम्हें बताना है. मैं अब तुम्हारे लिये कोई काम न करूंगा. तुम बहुत चिढ़े हुए रहते हो. नगर में जो मेरे मित्र हैं उनसे मैं कुछ पैसे उधार लूंगा और अपना फार्म खरीदूंगा.”

“लेकिन मेरा काम कौन करेगा?” भाई ने पूछा.

“मैं नहीं जानता,” हिन्नी बिन्नी बंको बोला. “वह तुम्हारी समस्या है.”
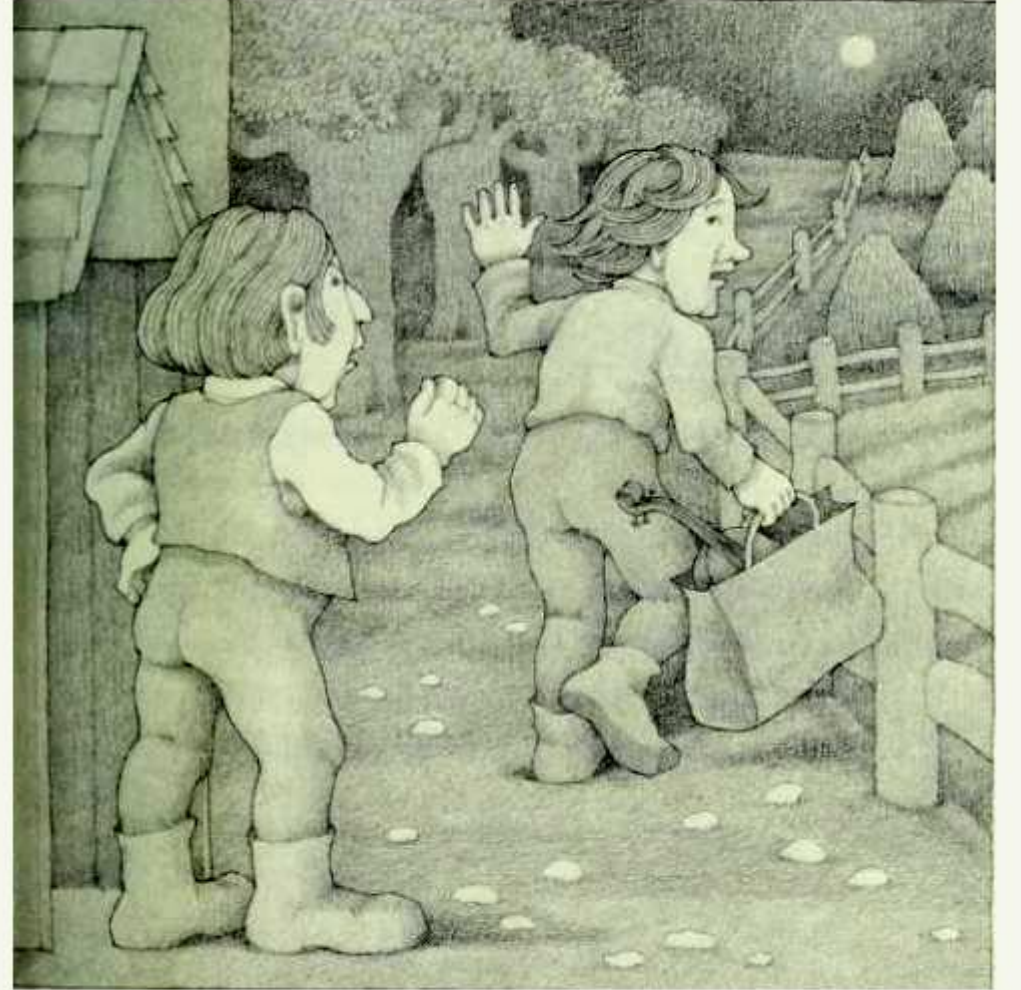
हिन्नी बिन्नी बंको और मिल्ली बी.

हिन्नी बिन्नी बंको को अपना नया फार्म बहुत पसंद था. खेत में उपज अच्छी हुई और जो पैसे अपने मित्रों के देने थे वह उसने दे दिए. उसके पशु भी प्रसन्न थे. हिन्नी बिन्नी बंको उन सब के लिये फिडॅल पर अपने ख़ास गीत बजाता था.

हिन्नी बिन्नी बंको बड़े मज़े में था. फिर एक दिन उसने किसी को फूल तोड़ते देखा. हिन्नी बिन्नी बंको को लगा कि वह लड़की बहुत सुंदर थी. उसे उसी पल उस लड़की से प्यार हो गया. लड़की का नाम था मिल्ली बी.

हिन्नी बिन्नी बंको का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा. उसके पाँव कांपने लगे. “मैं उस मिल्ली बी. के साथ विवाह करूंगा,” उसने कहा. “अगर मैं नहीं कर पाया तो मेरा नाम हिन्नी बिन्नी बंको नहीं.”

लेकिन उसने सोचा कि पहले उसे ऐसा कुछ करना होगा कि मिल्ली बी. उससे प्यार करने लगे. “अब मैं ऐसा क्या कर सकता हूँ कि वह मुझे प्यार करने लगे?” हिन्नी बिन्नी बंको सोचने लगा.

“समझ आ गया! मुझे उसके लिये कोई अच्छा काम करना होगा.” वह मिल्ली बी. के घर गया और उसके बगीचे से सारे घासपात निकाल दिए.

इस काम में बहुत समय लग गया और हिन्नी बिन्नी बंको के कपड़े भी गंदे हो गये. आखिरकार काम खत्म हुआ तो घंटी बजाने के लिए वह दरवाज़े की ओर गया.

दरवाज़े पर उसका भाई, फूलों का बड़ा गुच्छा लिए, खड़ा था. “हेलो,” मिल्ली बी. ने उसके भाई से कहा. “कितने सुंदर फूल हैं! क्या मेरे साथ चाय पीने के लिये तुम भीतर नहीं आओगे?”
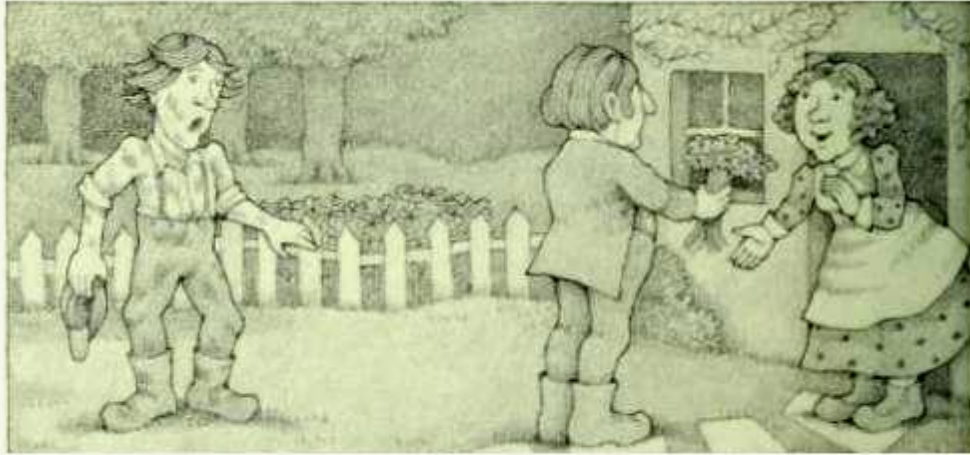
“धन्यवाद,” उसके भाई ने कहा. उसने हिन्नी बिन्नी बंको की ओर देखा. “जाओ यहाँ से, गंदे लड़के,” उसने कहा. “इस लड़की को तंग मर करो.” फिर भाई ने भीतर जाकर दरवाज़ा बंद कर लिया.

हिन्नी बिन्नी बंको घर चला गया. “मैं हार नहीं मानूँगा,” उसने कहा. “मैं उस मिल्ली बी. के साथ अवश्य विवाह करूंगा, नहीं तो मेरा नाम हिन्नी बिन्नी बंको नहीं.”

अगले दिन हिन्नी बिन्नी बंको ने एक बड़ा चॉकलेट केक बनाया. फिर उसने स्नान किया, अपने सबसे सुंदर कपड़े पहने और मिल्ली बी. से मिलने चल दिया.

वह मिल्ली बी.के घर के निकट पहुंचा ही था की उसे पानी के उछलने की आवाज़ सुनाई दी.
“हे भगवान!” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. उसने अपना केक ज़मीन पर रख दिया और तालाब की ओर भागा. तालाब के बीच में एक छोटी भूरी बिल्ली थी. “घबराओ नहीं, मैं तुम्हारी सहायता करूंगा,” हिन्नी बिन्नी बंको ने चिल्ला कर कहा.

वह तालाब में कूद गया और बिल्ली की ओर तैरने लगा. लेकिन जब वह बिल्ली के निकट पहुंचा तो बिल्ली बोली, “फ्फ्ट!’ और तैर कर दूसरी ओर चली गयी. हिन्नी बिन्नी बंको भी तैर कर वापस आ गया.

उसने सिर को झटका देकर अपने कानों से पानी बाहर निकाला. फिर वह अपने केक को ढूँढने लगा. केक वहां नहीं था.

“कोई बात नहीं,” हिन्नी बिन्नी बंको बोला. “मैं मिल्ली बी. को बिल्ली के विषय में बताऊँगा. यह तो बड़ी मज़ेदार कहानी है.”

घंटी बजाने के लिए वह मिल्ली बी. के घर के दरवाज़े के निकट आया. दरवाज़े के पास उसका भाई चॉकलेट केक लिये खड़ा था.

“हेलो,” मिल्ली बी. ने उसके भाई को कहा. “कितना बढ़िया केक है! क्या मेरे साथ चाय पीने के लिए तुम भीतर नहीं आओगे?”

“धन्यवाद,” उसके भाई ने कहा. उसने हिन्नी बिन्नी बंको की ओर देखा. “जाओ यहाँ से, गीले लड़के,” उसने कहा. “इस लड़की को तंग मत करो.” फिर उसने दरवाज़ा बंद कर लिया.

हिन्नी बिन्नी बंको घर आ गया. उसे समझ न आ रहा था कि अब वह ऐसा क्या कर सकता था कि मिल्ली बी. उससे प्यार करने लगे. इस कारण वह उदास हो गया. उसने वह चीज़ उठाई जो उसे हमेशा ख़ुशी देती थी – उसका फिडॅल. वह सैर करने निकल पड़ा.

चलते-चलते अपनी भावनाओं को लेकर उसने कुछ गीत फिडॅल पर बजाए. उसने 'पर्वत जैसा हृदय' गीत और 'मार्शमैलो जैसे घुटने' गीत बजाया. उसने एक गीत बजाया जिसका नाम था 'भाई ले गया मेरा केक'. फिर उसने एक और गीत बजाया जो था, 'बहुत प्यार करता हूँ मैं तुम से मिल्ली बी'. हिन्नी बिन्नी बंको ने अंतिम गीत सबसे अच्छा बजाया क्योंकि यह उसके हृदय की पुकार थी.
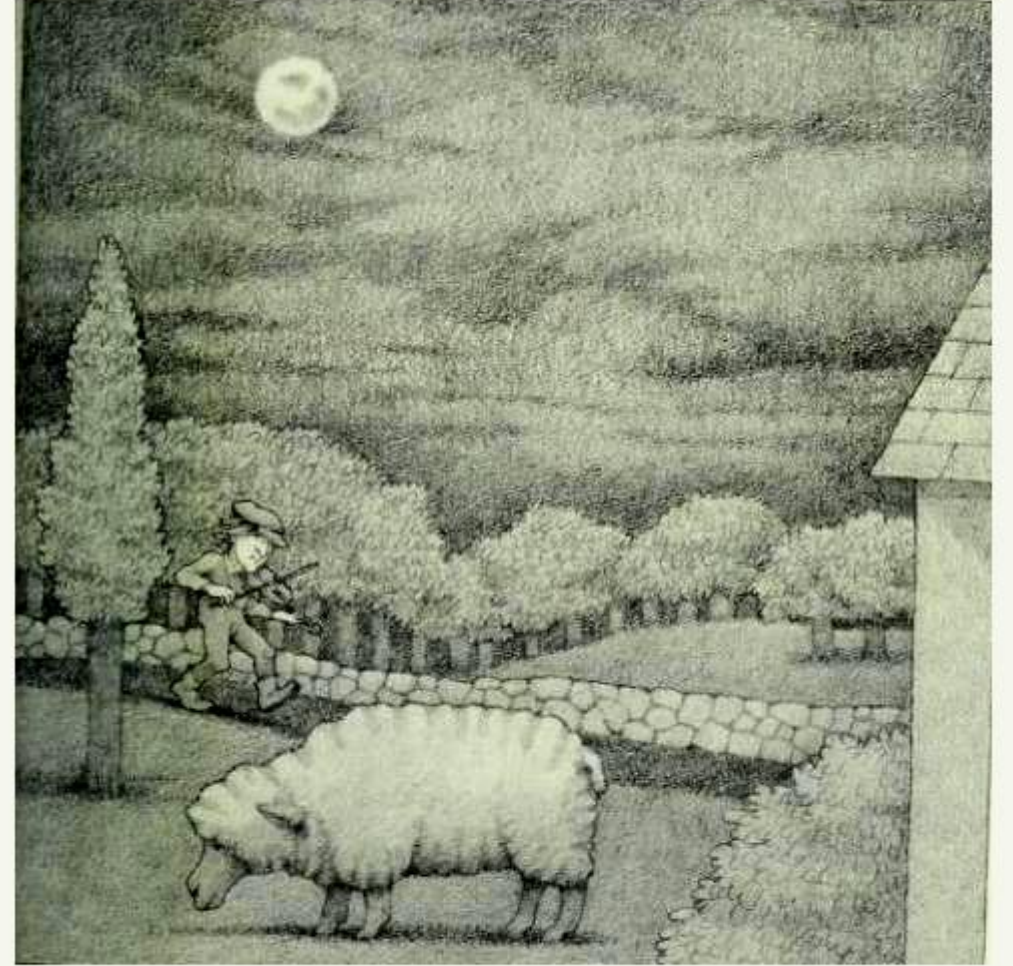
"अरे, तुमने यह बात मुझे अभी तक क्यों नहीं बताई?" हिन्नी बिन्नी बंको को अपनी आँखों पर विश्वास ही न हुआ. मिल्ली बी. उसके सामने खड़ी थी. वह चलते-चलते उसके घर तक आ गया था.

हिन्नी बिन्नी बंको को समझ न आया कि क्या कहे.

"ठीक है, कोई बात नहीं," मिल्ली बी. ने कहा. 'मैं भी तुम से प्यार करती हूँ. हम विवाह कब करेंगे?"

"कल!" हिन्नी बिन्नी बंको बोला. और उन्होंने विवाह कर लिया.

मिल्ली बी. ने राह दिखाई

हिन्नी बिन्नी बंको और मिल्ली बी. वर्षों तक फार्म में रहे. वह प्रसन्न थे. वह खूब मेहनत करते थे. और उनके पन्द्रह बच्चे थे.

हिन्नी बिन्नी बंको ने अपने सब बच्चों को संगीत सिखाया. उसने उन्हें फिडॅल और बाँसुरी और ढोल और भोंपू बजाना सिखाया. उसने तो सबसे छोटे बच्चे, मेल्विन, को बड़ा बॉस ड्रम बजाना भी सिखा दिया. और सबसे अच्छी बात तो बच्चों को यह सिखलाई कि उन्हें वह गीत बजाने चाहियें जो वह अपने मन में सुनते थे.

शीघ्र ही सारे घर में संगीत सुनाई देने लगा था. हरेक कोई न कोई गीत बजा रहा होता - सिवाय मिल्ली बी के. वह सिर्फ संगीत सुनती थी.

“तुम्हारी माँ अच्छी श्रोता है,” हिन्नी बिन्नी बंको ने अपने बच्चों से कहा. “मेरी समझ में तो वह सबसे अच्छी श्रोता है.”

“हाँ, मैं अच्छी श्रोता हूँ,” मिल्ली बी. बोली. “और जो संगीत तुम सब बजाते हो वह मुझे पसंद हैं. लेकिन कभी तुम सब एक साथ क्यों नहीं बजाते? हमारी बैठक में हमारा अपना ऑर्केस्ट्रा हो सकता है.”

“यह तो बड़ा अच्छा सुझाव है,” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. “चलो, सब बैठक में आ जाओ.” सब बैठक में आ गये और एक साथ संगीत बजाने लगे.

‘डम डम! चीं चीं! काँ काँ! ब्ला ब्ला!’ बहुत ही डरावनी आवाज़ें सुनी दीं!

“रुको!” मिल्ली बी. चिल्लाई. “मैं यह सहन नहीं कर सकती!” उसने एक सिरहाना उठा कर अपने सिर पर रख लिया.

“मुझे लगता है कि कुछ गड़बड़ है,” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा.

मिल्ली बी. ने सिर के ऊपर से सिरहाना हटाया. “कुछ गड़बड़ है,” उसने कहा. “और मैं जानती हूँ कि क्या गड़बड़ है. तुम सब एक साथ अलग-अलग गीत बजा रहे हो. तुम सब को एक ही गीत बजाना चाहिये.”

“ओह,” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा.

“ओह,” पन्द्रह बच्चों ने कहा.

मिल्ली बी. खड़ी हो गयी. “तुम सब ‘बिल्ली पकड़े अपनी पूंछ’ गीत बजाओ,” उसने कहा. “मैं यहाँ सामने खड़ी हो कर हाथ हिला कर तुम्हें संकेत देती रहूँगी कि कितना ऊँचा या कितना धीमा बजाना है.”

उसने अपने हाथ लहराये और सब ‘बिल्ली पकड़े अपनी पूंछ’ गीत बजाने लगे. अब बहुत ही मधुर संगीत बजा.

गीत के समाप्त होते ही हिन्नी बिन्नी बंको दौड़कर मिल्ली बी. के पास आया और उसे गले लगाया. “तुम सच में सबसे अच्छी श्रोता हो,” उसने कहा. “और तुम सबसे अच्छी पत्नी भी हो.”

मिल्ली बी. ने भी उसे गले लगाया. “तुम स्वयं भी एक अच्छे पति हो,” उसने कहा. “चलो, और संगीत बजाते हैं.”

हिन्नी बिन्नी बंको की राजा से भेंट

कई वर्ष बीत गये. खेतीबाड़ी करते-करते हिन्नी बिन्नी बंको का मन भर गया. अब उसे खेती करना अच्छा न लगता था. वह तो हर समय सिर्फ संगीत बजाना चाहता था. लेकिन उसे पता न था कि ऐसी नौकरी उसे कहाँ मिल सकती थी.

एक सुबह उसने नाश्ते की ओर देखा और मुंह बनाते हुए बोला, "उफ़! आज मन बहुत खराब है."

"ऐसा है?" मिल्ली बी. ने पूछा. "क्या हुआ है?"

"बहुत थकान हो रही है," हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. "और मुझे ज़ुकाम लग रहा है."

"बेचारा हिन्नी बिन्नी बंको!" मिल्ली बी. बोली. "तुम हर समय संगीत बजाना चाहते हो. पर घबराओ नहीं. सब ठीक हो जाएगा."

"छी," हिन्नी बिन्नी बंको बोला. फिर उसने अख़बार उठाया और पढ़ने लगा. उसका मुंह खुला का खुला रह गया. "देखो, मिल्ली बी.!" वह चिल्लाया. "यहाँ लिखा है कि राजा बीमार हैं. उन्हें सारा दिन बिस्तर में रहना पड़ता है. और किसी तरह भी उनका मन बहल नहीं रहा."

"कितना बुरा हुआ!" मिल्ली बी. ने कहा. "बेचारे राजा."

"अरे, मुझे पता है कि मुझे क्या करना होगा," हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. "मुझे वहां जाकर उनके लिए संगीत बजाना होगा. संगीत सुनकर उन्हें अच्छा लगेगा."

उसने अपना फिडॅल एक पोटले मैं बाँध लिया और महल की ओर चल दिया. मिल्ली बी. ने हाथ हिला कर अलविदा किया. “चिंता नहीं करो,” उसने कहा. “सब ठीक हो जाएगा.”

लेकिन जब हिन्नी बिन्नी बंको महल के पास पहुंचा तो पहरेदार ने उसे भीतर नहीं जाने दिया. “जाओ यहाँ से,” उसने कहा. “राजा इतने बीमार हैं कि तुम से नहीं मिल सकते.”

“मैं प्रयास करूंगा कि वह अच्छा महसूस करें,” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. लेकिन पहरेदार ने दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया.

“उफ़,” हिन्नी बिन्नी बंको सोचने लगा. “भीतर जाने के लिये अब मुझे कोई नया रास्ता खोजना होगा. राजा को मेरी आवश्यकता है.”
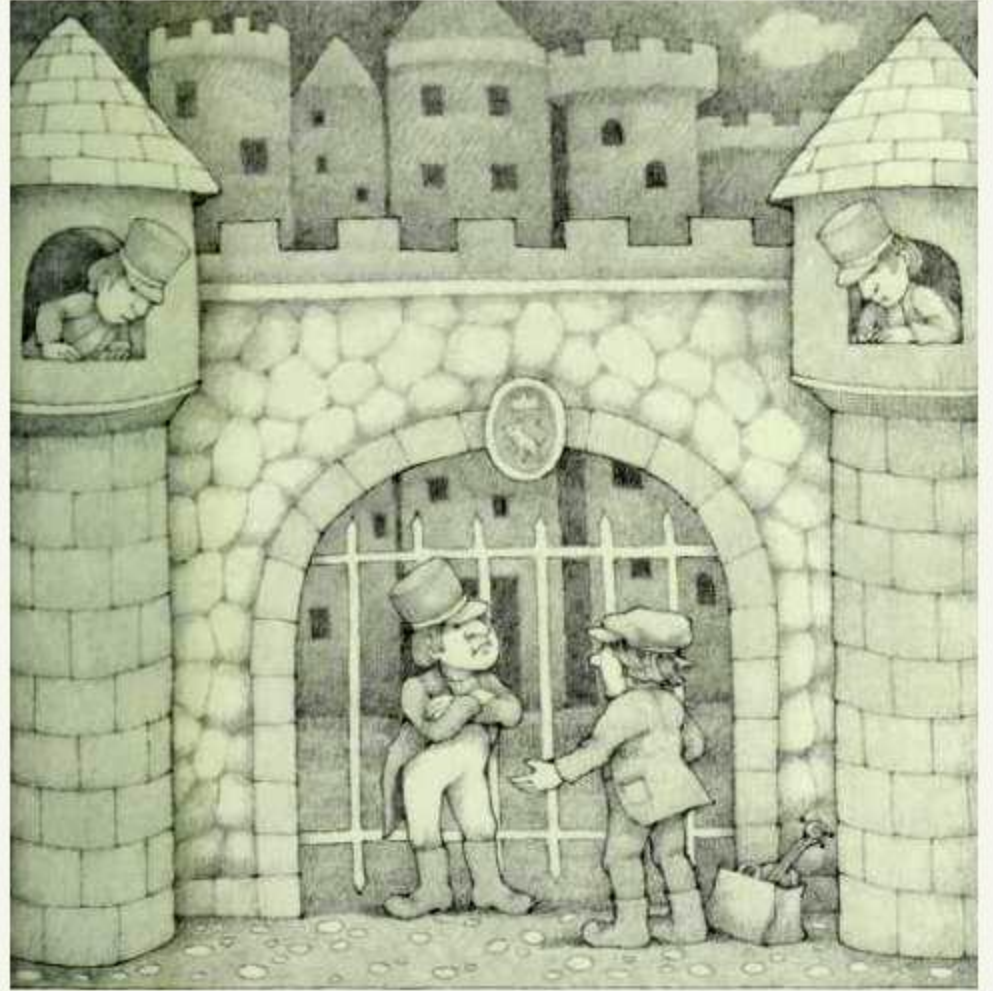
तभी उसने एक गाड़ी को महल के फाटक के पास रुकते देखा. गाड़ी में राजा के घोड़ों के लिये घास-फूस रखी थी. “आहा!” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. वह गाड़ी पर चढ़ गया और घास के भीतर छिप गया. गाड़ी फाटक से अंदर चली गयी और इस तरह हिन्नी बिन्नी बंको भी अंदर पहुँच गया.

घास से उसे छींके आने लगी और उसका ज़ुकाम बढ़ गया. पर उसने इस बात की परवाह नहीं की. वह महल के अंदर था.

हिन्नी बिन्नी बंको, राजा के शयनकक्ष तक, सारे रास्ते छींके मारता रहा. तब उसकी मुलाकात एक दूसरे पहरेदार से हुई.

“जाओ यहाँ से,” पहरेदार ने कहा. “राजा इतने बीमार हैं कि तुम से नहीं मिल सकते.”

“मैं अपने संगीत से उनका मन बहलाना चाहता हूँ,” हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा.

“मूर्ख मत बनो,” पहरेदार बोला.

उसकी बात सुन कर हिन्नी बिन्नी बंको को गुस्सा आ गया. वह पहरेदार को बताना चाहता था कि उसका संगीत मूर्खतापूर्ण नहीं था.

लेकिन इसके बजाय हिन्नी बिन्नी बंको ने एक छींक मारी, बहुत प्रचंड छींक.

छींक इतनी प्रचंड थी कि पहरेदार उड़कर हाल के दूसरी तरफ जा पहुंचा और फिर खिड़की से बाहर नीचे, पक्षियों के लिए बने एक जल-कुंड में, जा गिरा.

हिन्नी बिन्नी बंको मुस्कराया. फिर उसने अपनी नाक साफ़ की और शाही शयनकक्ष के अंदर आ गया.
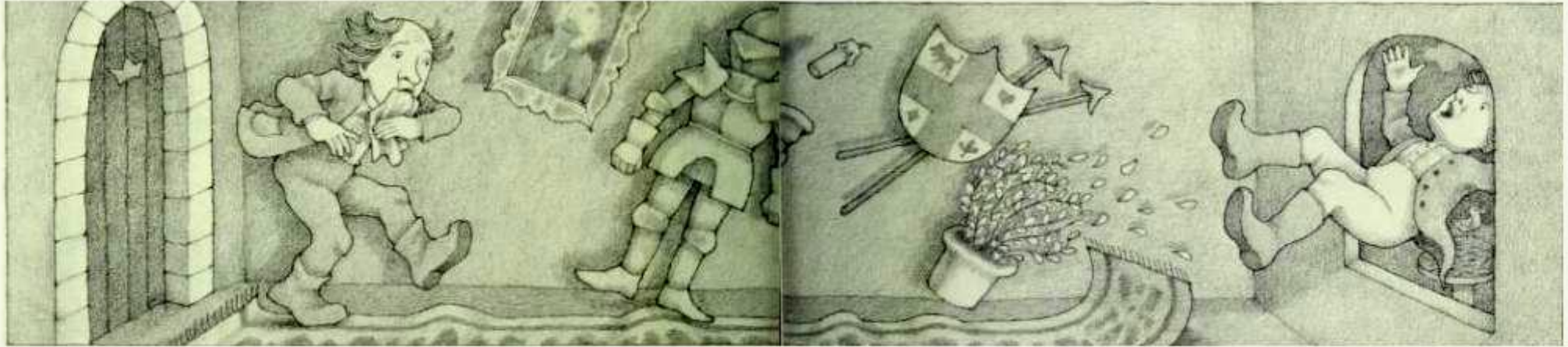
कमरे के बीच में एक विशाल पलंग था जिसके चारों ओर परदे टंगे थे. पर्दों के अंदर कोई व्यक्ति करहा रहा था. “बेचारे राजा,” हिन्नी बिन्नी बंको ने सोचा. “मैं उनका अभिवादन भी न करूंगा, बस अपना संगीत सुनाऊँगा.”
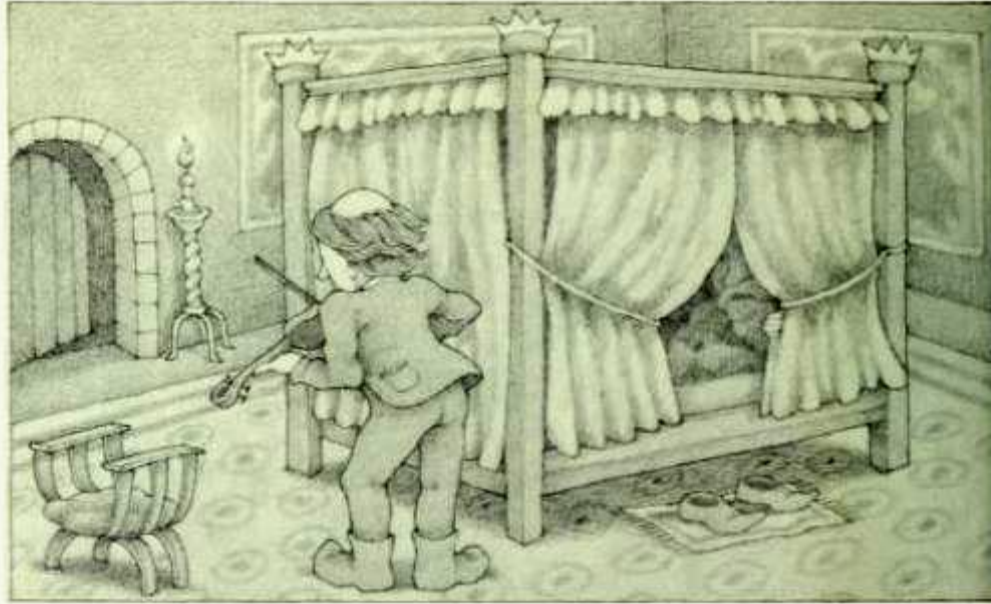
उसने अपना फिडॅल अपनी ठोड़ी के नीचे दबाया और बजाने लगा. उसने ‘मेरे कानों में घास’ गीत बजाया. करहाने की आवाज़ बंद हो गयी.

फिर उसने ‘छींक ने उड़ाया पहरेदार’ गीत बजाया. पर्दे के पीछे कोई धीरे-धीरे हंसा.

उसने ‘राजा की जयजयकार’ गीत बजाया.

“वाह!” परदे के पीछे से आवाज़ आई. “मुझे लगता है कि या तो मेरी मृत्यु हो गयी है और मैं स्वर्ग पहुँच गया हूँ या फिर यह हिन्नी बिन्नी बंको है जो संगीत सुना रहा है.”

हिन्नी बिन्नी बंको उस आवाज़ को पहचानता था. लेकिन उसके अनुमान लगाने से पहले ही, कि आवाज़ किस की थी, परदे खुल गये और बूढ़ा फटीचर आदमी कूद कर बाहर आया! लेकिन अब वह दरिद्र अवस्था में नहीं था. उसने बैगनी रंग के कपड़े और सोने का मुकुट पहन रखा था.

"यह तो आप हैं!" हिन्नी बिन्नी बंको बोला.

"यह मैं हूँ!" राजा ने कहा. "मैं तुम्हें सदा पसंद करता था, हिन्नी बिन्नी बंको. लेकिन अब तुम और भी प्रिय लगते हो. तुम ने फिर से मुझे अच्छा कर दिया है."

"यह तो अच्छी बात है," हिन्नी बिन्नी बंको ने कहा. "मैं भी आपको पसंद करता हूँ."

"फिर तो," राजा बोले, "मेरे विचार में तुम्हें यहाँ महल में आकर रहना चाहिये ताकि तुम हर समय मुझे संगीत सुना सको."

"क्या मिल्ली बी. भी आ सकती है?" हिन्नी बिन्नी बंको ने पूछा. "और मेरे पन्द्रह बच्चे भी?"

"बेशक," राजा ने कहा. "सब को ले आओ. अब मुझे कोई और गीत सुनाओ."

हिन्नी बिन्नी बंको ने कुछ पल सोचा. मिल्ली बी. ने जो कुछ कहा था उसे याद आया. फिर अपने मन में उसने एक गीत सुना. जितने भी गीत उसने अब तक मन में सुने थे यह गीत उन सब गीतों से सुंदर गीत था. यह गीत था 'सब कुछ ठीक है'. हिन्नी बिन्नी बंको ने यह गीत बजा कर राजा को सुनाया.

समाप्त